दीवारों का गिरना
(10:1–11:18)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, बर्लिन पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में विभाजित गया था। 1961 में कम्युनिस्टों ने पूर्वी बर्लिन छोड़ने वालों को दूर रखने के लिए बर्लिन की बदनाम दीवार खड़ी कर दी। वर्षों तक, बहुत से लोगों ने उस दीवार को फांदने की कोशिश की; 170 से अधिक लोग इस कोशिश में मारे गए। मुझे लगता था कि जब मैं मरूंगा तो यह दीवार खड़ी ही होगी, सो नवम्बर 1989 में मैं चकित रह गया, जब यह समाचार मिला कि बर्लिन की दीवार गिर गई है! टेलीविजन पर जश्न मनाते लोगों की भीड़ और दीवार को तोड़ते हुए लोगों के दृश्य मेरी आंखों और मन में अभी भी वैसे के वैसे ही हैं।

वह घटना इतिहास बनाने वाली थी, वैसे ही नया नियम हमें उससे बढ़कर आश्चर्यजनक दिन के बारे में बताता है जब यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवार गिर गई थी। पौलुस ने उस घटना का इन शब्दों में वर्णन किया:

> इस कारण स्मरण करो, कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो, (और जो लोग शरीर में ... खतनारहित ... हैं)। तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, ...पर अब तो मसीह यीशु में तुम [अन्यजाति] जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों [यहूदियों और यूनानियों] को एक कर लिया *और अलग करने वाली दीवार जो बीच में थी को ढहा दिया।* और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, को मिटा दिया, ताकि दोनों [अर्थात यहूदियों और यूनानियों] से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह [अर्थात, कलीसिया[1]] बनाकर परमेश्वर से मिलाए। और उसने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उस के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है। इसलिए तुम [अन्यजातियो] अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने [परिवार] के हो गए हो (इफिसियों 2:11–19)।

यहूदियों और अन्यजातियों के ''बीच की दीवार'' ''वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं'' अर्थात, पुराना नियम था। परमेश्वर ने यहूदियों के साथ एक विशेष वाचा बांधी थी और संसार में मसीह को लाने की उसकी योजना के एक भाग के

रूप में उन्हें मूसा की व्यवस्था दी थी (गलतियों 3:16, 19, 24, 25)। अन्यजातियों को उस वाचा में शामिल नहीं किया गया था,[2] क्योंकि उनमें और यहूदियों में व्यवस्था एक बहुत बड़ी दीवार थी। यीशु उस दीवार को गिराने के लिए आया था। जब वह क्रूस पर मरा तो उसने ''*हर एक* मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखा'' अर्थात यहूदी और अन्यजाति के लिए एक समान (इब्रानियों 2:9)। व्यवस्था के ''बीच की दीवार'' को यीशु की मृत्यु के समय वैधानिक रूप से ''मिटा दिया'' गया!

यद्यपि यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवार *सैद्धान्तिक रूप* से कलवरी में गिरी थी और *व्यावहारिक रूप* से कैसरिया में। दूसरी तरफ आत्मिक रूप से, लूका 23 में दीवार *परमेश्वर* के मन में तो गिर गई,[3] परन्तु *लोगों* के मन में यह प्रेरितों 10 तक नहीं गिरी।

समस्या का दूसरा भाग यह था कि ''बीच की दीवार'' में यहूदियों ने अपनी गढ़बन्दियां जोड़ दी थीं। व्यवस्था ने उन्हें सिखाया था कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, और उनका फैसला था कि वे अन्यजातियों से *उत्तम* थे। व्यवस्था ने उन्हें अलग होने के लिए सिखाया, और उन्होंने अलग होने का निर्णय लेकर यह अर्थ निकाला कि उन्हें दूसरों को *तुच्छ* मानना चाहिए।[4] कई प्रकार से, मनुष्य ने घमण्ड, पूर्वाग्रह, और शुद्ध आचरण की दीवारें खड़ी कर दीं जो परमेश्वर द्वारा ठहराई गई दीवार से अत्यन्त कठोर और बड़ी थीं। प्रेरितों 10 बताता है कि परमेश्वर ने किस प्रकार आरम्भिक कलीसिया में इन दीवारों को गिराना आरम्भ किया।

आदत के अनुसार लूका ने जब कहानी को पुन: बताने की तैयारी की, तो उसने दूसरी बार बताने के लिए कुछ महत्वपूर्ण विवरणों को रख छोड़ा। इसलिए मैं प्रेरितों 10 के अपने अध्ययन को प्रेरितों 11 के विवरणों के साथ पूरा करूंगा। इन अध्यायों का अध्ययन करते हुए, आइए सीखें कि लोगों के बीच खड़ी दीवारों को आज कैसे गिराया जा सकता है।

परमेश्वर का पहला कदम: अन्यजातियों को तैयार करना (10:1-8, 22, 30-32;11:13, 14)

दो व्यक्तियों को मिलाने के प्रयास में, पहले उनसे व्यक्तिगत तौर पर बात करना एक अच्छा विचार है और साधारणत: यह और भी अच्छा है कि जो मेल करने का अधिक इच्छुक हो, उसी से पहले बात की जाए। इसलिए, परमेश्वर ने पहले अन्यजातियों तक पहुंच बनाई।

हम पढ़ते हैं, ''कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था'' (10:1)। यहूदियों के दृष्टिकोण से फलस्तीन में यरूशलेम अति महत्वपूर्ण नगर था, जबकि रोमियों के दृष्टिकोण से कैसरिया। यह फलस्तीन पर[5] शासन चलाने के लिए रोमी राज्यपाल और रोमी सेनाओं का मुख्यालय था। इसे हेरोदेस महान ने दोबारा बनवाया था और इसका नामकरण अगस्तुस कैसर के नाम पर किया गया था। इस सुन्दर नगर में संगमरमर की गलियों तथा भवनों की भरमार थी। तथापि, परमेश्वर की

दिलचस्पी संगमरमर में नहीं; बल्कि एक आदमी में थी जिसका नाम कुरनेलियुस था।

शुरू में ऐसा नहीं लगता था कि कुरनेलियुस मनपरिवर्तन करने वालों में प्रथम गैर यहूदी व्यक्ति होगा। वह एक सिपाही था, और सिपाही आत्मिक विषयों में अपनी स्वीकृति के लिए नहीं जाने जाते। कुरनेलियुस ''इतालियानी नाम की पलटन का सूबेदार था।'' ''पलटन'' छह सौ से एक हज़ार पुरुषों की सेना की एक टुकड़ी को कहा जाता था।[6] वाक्यांश ''*इतालियानी* पलटन'' संकेत देता है कि इस विशेष टुकड़ी की भर्ती इटली में की गई थी और इसमें मूलत: इटली वासी ही थे।[7] कुरनेलियुस के लातीनी नाम[8] से सुझाव मिलता है कि वह भी, मूलत: इटली से था। ''सूबेदार'' होने के कारण वह एक सौ सिपाहियों पर अफ़सर था।[9]

रोमी सिपाही होने के बावजूद, कुरनेलियुस *एक भला आदमी* था। कई बार बुरी जगहों में अच्छे आदमी मिल जाते हैं। वास्तव में, वह असाधारण रूप से भला आदमी था। हम 10:2 में पढ़ते हैं कि ''वह भक्त था, और परिवार सहित परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।'' बाद में, उसके सेवकों ने उसे ''धर्मी और परमेश्वर से डरने वाला और सारी यहूदी जाति में सुनामी मनुष्य'' बताया (10:22)। यह रोमी अधिकारी मूर्तिपूजकों के धर्मों के खालीपन से ऊब चुका था और सच्चे परमेश्वर में विश्वास की ओर लौट आया था। वह ''परमेश्वर से डरने वाला''[10] एक अन्यजाति व्यक्ति था जो यहोवा में विश्वास रखता था, व्यवस्था के नैतिक और माननीय मापदण्डों को मानता था, परन्तु यहूदी मत धारण करने के लिए उसका खतना नहीं हुआ[11] था।

एक दिन कुरनेलियुस शाम के 3:00 बज गए थे जो प्रार्थना कर रहा था।[12] यहूदियों ''प्रार्थना का समय'' था।[13] अचानक, ''एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहने हुए, (उसके) साम्हने आ खड़ा हुआ'' (10:30)!

> उसने दिन के तीसरे पहर[14] के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा,[15] कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मेरे पास भीतर आकर कहता है; कि हे कुरनेलियुस। उसने उसे ध्यान से देखा; और डरकर[16] कहा; हे प्रभु क्या है?[17] उस ने उस से कहा, तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के साम्हने पहुंचे हैं (10:3, 4)।

किसी बलिदान के उठते धुएं की तरह कुरनेलियुस की प्रार्थनाएं और काम परमेश्वर की उपस्थिति में ऊपर गए थे।[18] बाद में, कुरनेलियुस ने ध्यान दिया कि स्वर्गदूत ने यह भी जोड़ा था, ''हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के साम्हने स्मरण किए गए हैं'' (आयत 31)।

कभी-कभी यह प्रश्न पूछा जाता है, ''क्या परमेश्वर ऐसे व्यकित प्रार्थना सुनता है जो मसीही नहीं है?'' यूहन्ना 9:31 को उद्धृत करना कि ''हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता''[19] और सहजता से उत्तर देना लुभाता है, ''नहीं।'' परमेश्वर ने कुरनेलियुस की प्रार्थना सुनी, इसलिए बढ़िया उत्तर यह हो सकता है कि ''यह इस पर

निर्भर करता है कि उसका जीवन कैसा है और वह प्रार्थना क्या कर रहा है।'' यदि वह कुरनेलियुस के जैसा ही कोई व्यक्ति है, जो प्रभु को जानने की खोज कर रहा है, तो प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति स्वीकार करने से दुख नहीं बल्कि सहायता ही मिल सकती है[20] जब तक यह समझा जाए कि ज्ञान *परमेश्वर के वचन से* मिलता है (11:14)। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति सुसमाचार की आज्ञा मानने से हटकर उद्धार के लिए प्रार्थना करता है, तो परमेश्वर *उस* प्रार्थना[22] को न सुन सकता है और न सुनेगा![21]

इस कथन के बाद कि परमेश्वर ने कुरनेलियुस की प्रार्थना सुन ली, स्वर्गदूत ने सूबेदार को निर्देश दिये: ''और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन चमड़े का धन्धा करने वाले के यहां पाहुन है, जिसका घर समुद्र के किनारे है'' (10:5, 6)।[23] 10:22 के अनुसार, पतरस को बुलाने का उद्देश्य यह था कि सिपाही ''उससे वचन सुने।'' अध्याय 11 में हम देखेंगे कि स्वर्गदूत ने कुरनेलियुस को बताया था, ''वह तुम से ऐसी बातें कहेगा,[24] जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा'' (11:14)।

यदि मुझे 10:2 में वर्णित गुणों वाले किसी व्यक्ति के जनाज़े पर प्रचार करना हो और ईमानदारी के साथ कहना हो कि एक स्वर्गदूत ने उसे यह बताने के लिए अभी-अभी दर्शन दिया कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना और भले कामों से प्रसन्न हुआ, तो सुनने वाले निश्चय ही पुकार उठेंगे, ''कितना भाग्यवान आदमी था! यह अवश्य स्वर्ग में गया होगा,'' तथापि, कुरनेलियुस की दूसरी विशेषता का भी उल्लेख होना चाहिए। वह *खोया हुआ,* अपने पापों में नाश था! स्वर्गदूत के शब्दों पर ध्यान दीजिए: ''वह [पतरस] तुम से ऐसी बातें कहेगा,[25] जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना *उद्धार* पाएगा।''[26]

यदि कुरनेलियुस आज के लोगों जैसा होता, तो स्वर्गदूत की बात से कि उद्धार के लिए उसे क्या करना चाहिए, वह अपने आप को अपमानित महसूस करता: ''तुझे यह साहस कैसे हुआ कि मुझे सुझाव दे कि मैं खोया हुआ हूं! किसी से भी पूछ ले, और लोग ही बताएंगे कि मैं कितना भला आदमी हूं, कितना धार्मिक हूं मैं!'' परन्तु, इस सूबेदार में एक और विशुद्ध गुण था, *विनम्रता*। उसने अपनी भलाई पर ज़ोर नहीं दिया, बल्कि तुरन्त एक सच्चे सैनिक की तरह आज्ञा का पालन किया:

> जब वह स्वर्गदूत जिस ने उससे बातें की थीं, चला गया तो उसने दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे उन में से एक भक्त सिपाही[27] को बुलाया। और उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा (10:7, 8)।

दिन ढलने के बावजूद कुरनेलियुस ने याफा के लिए उनकी तीस मील की यात्रा का आरम्भ कर दिया। आज कार से तीस मील जाना कोई बड़ी बात नहीं लगती। शाम को 4:00 बजे निकलकर, हम याफा में जाकर, पतरस को साथ लेकर, रात का भोजन करने के समय तक फिर कैसरिया में लौट सकते हैं; परन्तु इन तीन पुरुषों को इस कठिन यात्रा में कई घण्टों का समय लगना था।[28]

बाद में, पतरस ने आकर कुरनेलियुस से कहा, ''अब मैं पूछता हूं कि मुझे किस काम के लिए बुलाया गया है'' (10:29)। कुरनेलियुस के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना में शामिल मुख्य सच्चाइयों को प्रकाश में लाने के लिए आइए इस उपयुक्त प्रश्न को कई रूपों में पूछें। पहले, हम पूछते हैं, ''*किसी* मनुष्य को बुलवाने की क्या आवश्यकता थी?'' स्वर्गदूत तो था ही; कुरनेलियुस को स्वर्गदूत ने क्यों नहीं बताया कि उसका उद्धार कैसे हो सकता है? स्वर्गदूत ने कुरनेलियुस को उद्धार पाने का मार्ग उसी कारण से नहीं बताया जिस कारण स्वर्गदूत और आत्मा ने अध्याय 8 में खोजे को निर्देश नहीं दिए थे, और उसी कारण से जैसे यीशु ने शाऊल को नहीं बताया था जब उसने उसे दर्शन दिया था (9:6)। सुसमाचार के ''धन'' का जिम्मा ''*मिट्टी* के बर्तनों,'' अर्थात मसीही लोगों को सौंपा गया है (2 कुरिन्थियों 4:7)। यीशु ने ग्रेट कमीशन मनुष्यों को दिया, स्वर्गदूतों को नहीं। ''मेल मिलाप की सेवा,'' ''मेल मिलाप का वचन'' मनुष्य को सौंपा गया है, स्वर्गीय सेना को नहीं (2 कुरिन्थियों 5:18, 19)। प्रेरितों के काम में, यद्यपि मनपरिवर्तन की कुछ घटनाओं में चमत्कारी तत्व हैं,[29] परन्तु परमेश्वर ने कहीं भी अपने प्रबन्ध को नहीं बदला कि *लोग* दूसरे *लोगों* को बताएं कि उद्धार कैसे होगा! स्वर्गदूत के प्रकट होने का उद्देश्य कुरनेलियुस का उद्धार नहीं, बल्कि प्रचारक और पापी को मिलाना था। इस ईश्वरीय दिशा-सूचक निर्देश के बिना, कुरनेलियुस अपने घर आने के लिए किसी यहूदी को कभी न्यौता न देता।

फिर, आइए प्रश्न को दूसरा रूप दें कि यद्यपि यह परमेश्वर की इच्छा थी कि कोई मनुष्य कुरनेलियुस के पास उद्धार का वचन सुनाए, प्रभु ने कुरनेलियुस को विशेष रूप से पतरस को ही बुलाने के लिए क्यों कहा? पतरस कैसरिया से तीस मील दूर था, और वहां पहले से ही आत्मा की प्रेरणा प्राप्त एक प्रचारक था, जिसका नाम फिलिप्पुस था।[30] याफा में पतरस को क्यों बुलाया गया, इसके उत्तर के लिए, हम पतरस को दिए यीशु के वायदे की ओर वापस चलते हैं: ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा'' (मत्ती 16:19)। पतरस ने उन कुंजियों का प्रयोग प्रेरितों 2 में किया जब उसने लोगों को पहली बार बताया कि उद्धार पाने के लिए उन्हें क्या करना है (2:38)। परन्तु, उस अवसर पर, मनुष्यजाति के केवल एक भाग को ही उस दीवार से जाने की अनुमति थी अर्थात केवल यहूदियों का ही बपतिस्मा हुआ था। प्रेरितों 10 में पतरस के पास सभी के लिए द्वार खोलने अर्थात कलीसिया में गैर यहूदियों को न्यौता देने के लिए उन कुंजियों का उपयोग करने का अवसर था! कई वर्षों बाद पतरस ने उन घटनाओं की बात की। ''हे भाइयो, तुम जानते हो, कि बहुत दिन हुए, कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुंह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें'' (15:7)।[31] परमेश्वर ने कुरनेलियुस को बताया कि वह पतरस को बुलाए क्योंकि यह प्रेरित परमेश्वर की पसन्द था जिसने उस सूबेदार को बताना था कि उद्धार कैसे पाया जाता है।

पापी तो तैयार था; अब परमेश्वर ने प्रचारक को तैयार करना था।

परमेश्वर का दूसरा कदमः यहूदी को तैयार करना (10:9-23, 34, 35; 11:5-12)

आयत 9 में दृश्य बदलकर याफा की ओर आ जाता है। अगले दिन दोपहर का समय था, और कुरनेलियुस के भेजे हुए तीन पुरुष नगर के निकट पहुंच गए थे। इतनी जल्दी वे तभी पहुंच सकते थे यदि उन्होंने रात भर सफ़र किया होता। जैसे ही थके हुए संदेशवाहक याफा की ओर मुड़े, परमेश्वर उनके आगमन के लिए पतरस को तैयार करने लग पड़ा। ''दूसरे दिन, जब वे चलते-चलते नगर के पास पहुंचे, तो दोपहर के निकट[32] पतरस कोठे पर प्रार्थना करने चढ़ा'' (10:9)।

पतरस अभी भी शमौन चर्मकार के घर में ही रह रहा था जो कि निःसंदेह प्रेरित के आगमन से मसीही लोगों के एकत्र होने का स्थान बन गया था। दोपहर के आसपास, पतरस एकांत में परमेश्वर के साथ बात करने की इच्छा से छत पर चढ़ गया। उन दिनों घरों की दीवारें समतल होती थीं,[33] जिन्हें सूखे मेवे रखने, गर्मियों में सोने, और एकांत स्थान के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। एक यहूदी होने के नाते, पतरस ने प्रतिदिन 12:00 बजे प्रार्थना करने की आदत डाल रखी थी (देखिए भजन 55:17; दानिय्येल 6:10)। और स्पष्टतः मसीही बनने के बाद उसने अपनी वह आदत छोड़ी नहीं। प्रार्थना करने की आदत बनाना तब तक ठीक है जब तक यह *केवल* आदत नहीं होती।

हम नहीं जानते कि पतरस ने क्या प्रार्थना की थी। शायद उसने यह प्रार्थना की होगी कि वह वचन को दृढ़ता से सुनाता रहे।[34] शायद उसने परमेश्वर से अवसर के नये द्वार खोलने के लिए बिनती की (तु. 14:27) थी। यदि उसने बाद वाली प्रार्थना की, तो उसकी प्रार्थना का उत्तर ऐसे मिलने वाला था जिसका उसे कभी अनुमान भी नहीं था!

प्रार्थना करते हुए, ''उसे भूख लगी, और वह कुछ खाना चाहता था''[35] (10:10क)। KJV अनुवाद के अनुसार उसे ''*बहुत* भूख लगी'' थी। परमेश्वर ने पतरस के साथ ऐसे ही आरम्भ करना था। यदि आप किसी को सिखाना चाहते हैं, तो आप वहीं से आरम्भ करें जहां से वह समझ सकता है।

नीचे वाले लोग भोजन तैयार करने लगे,[36] परन्तु पतरस छत पर, अपने घुटनों के बल झुककर,[37] प्रार्थना करता रहा (ध्यान दें 11:5)। ''परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया'' (10:10ख)। ''बेसुध होने'' का अर्थ यह नहीं कि जो कुछ बाद में हुआ, वह पतरस की *कल्पना ही* थी। अनुवादित यूनानी शब्द ''बेसुध'' वही शब्द है जिससे अंग्रेज़ी का ''एक्सटेसी (अर्थात समाधि)'' शब्द बना है।[38] यह पतरस की चेतना को, परमेश्वर की प्रेरणा से उस पर ज़ोरदार प्रभाव छोड़ना था। हम इसकी तुलना रेडियो के किसी स्टेशन को स्पष्ट सुनने के लिए ट्यूनिंग करने के साथ कर सकते हैं।

''और उस ने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है'' (10:11)। कुछ लेखकों का मानना है कि उन्हें निकट से एक बहुत बड़ी चादर अर्थात छत पर एक शामियाना या पास की एक किश्ती के ऊपर सफ़ेद जहाज़ देखना चाहिए जो पतरस के दर्शन का एक भाग बना। आखिर,

पतरस को *बहुत* भूख लगी थी! गम्भीरतापूर्वक आसपास कुछ खोज करने की आवश्यकता नहीं थी जिससे यह आसान हो कि चादर पतरस की कल्पना थी। पतरस ने कोई नशा नहीं किया था; उसे तो *परमेश्वर* की ओर से एक दर्शन मिल रहा था (11:5)।

आकाश से आई चादर तब तक नीचे होती गई जब तक यह पतरस के पास न आ गई (11:5)। उसने आश्चर्य से उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा (11:6); ''जिस में पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए [और जंगली जानवर[39]] और रेंगनेवाले जन्तु [पेट के बल चलने वाले जन्तु[40]] और आकाश के पक्षी थे'' (10:12) जो पृथ्वी के हर प्रकार के जानवर के प्रतिनिधि थे।[41] यहूदी लोग कुछ जानवरों को ''शुद्ध'' मानते थे, जैसे गाय, भेड़, और बकरियां और[42] कुछ को ''अशुद्ध'' जैसे ऊंट, सूअर तथा शेर! यह कैसा दृश्य और कैसी हलचल है! यह तो वैसे ही था जैसे नूह के जहाज़ का सामान संसार की सबसे बड़ी चादर में ठूंस दिया गया हो!

ऊपर से एक आवाज़[43] आई: ''हे पतरस उठ, मार और खा!'' (10:13)। अन्य शब्दों में, ''हे पतरस, मुझे मालूम है कि तुझे भूख लगी है, सीधे स्वर्ग से आया हुआ भोजन तेरे लिए प्रस्तुत है। जो कुछ भी तेरा मन करता है उठा, और पेट भर खा ले!'' यह एक *दर्शन* था, इसलिए अपने आप को इस बात में मत उलझायें कि पतरस ने मारने और खाने की आज्ञा का पालन कैसे किया होगा। एक बात तय है कि वहां पर ऐसा कोई भी साधन नहीं था जिससे पतरस ''उठकर, मारता और खाता!'' उसने कभी भी अशुद्ध जानवरों में से किसी को मारकर नहीं खाना था। फिर, अशुद्ध जानवरों के बहुत निकट रहने के कारण *शुद्ध* जानवर भी तो भ्रष्ट हो चुके थे। और भी, शुद्ध जानवरों को ''कोशर''[44] होने के लिए एक निश्चित विधि द्वारा मारना होता था, और वह विधि बहुत जटिल थी। पतरस के मन में शुद्ध तथा अशुद्ध जानवरों के सम्बन्ध में व्यवस्था की शिक्षा की पैठ इतनी गहरी थी (जैसे सामान्यत: होता था) कि पतरस ने बिना सोचे ही प्रतिक्रिया दे डाली और कहा, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र[45] या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है'' (10:14)। उसके कहने का अभिप्राय था, ''*... और मैं कभी खाऊंगा भी नहीं।*''

प्रभु से बहस करने वाला पतरस पहला व्यक्ति नहीं था। हनन्याह ने भी प्रभु से बहस की थी जब उसे शाऊल के पास जाने के लिए कहा गया था (9:13,14)। शाऊल ने प्रभु से बहस की थी जब उसे यरूशलेम छोड़ने के लिए कहा गया था (22:19, 20)। इनमें से हर एक को समझ आ गई कि परमेश्वर को देने के लिए सही उत्तर ''न'' नहीं है। ''नहीं, प्रभु'' सम्बन्धों में विरोध है। परमेश्वर को प्रभु मानना यह स्वीकार करना है कि उसे हमारे जीवनों को समुचित अवस्था में रखने का अधिकार है! परमेश्वर की ओर से बिनती का एक मात्र अटल उत्तर ''हां, प्रभु!'' है (देखिए लूका 6:46.)

आवाज़ ने फिर कहा: ''जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह'' (10:15)।[46] पतरस ने अवश्य ही ऐसे देखा होगा जैसे किसी ने डण्डे से उसके सिर पर प्रहार किया हो। किसी प्रकार की गलतफहमी को दूर करने के लिए, परमेश्वर ने अपना आदेश दोहराया: ''हे पतरस, उठ, मार और खा! ... जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध

ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।'' फिर परमेश्वर ने तीसरी बार अपनी बात दोहराई; ''तीन बार ऐसा ही हुआ'' (10:16क)। प्रभु ने कुरनेलियुस को *एक* बार निर्देश दिया था और उसने आज्ञा मान ली थी, परन्तु पतरस को उसे *तीन* बार कहना पड़ा। एक पापी को तैयार करने की अपेक्षा एक प्रचारक को तैयार करना तीन गुणा कठिन था! हमें पता नहीं कि पतरस ने हर बार विरोध किया या नहीं। यदि उसने विरोध किया होगा, तो उसका विरोध यकीनन ही हर बार कम होता गया होगा। फिर, जिस प्रकार अकस्मात ही यह पात्र दिखाई दिया था, वैसे ही ''आकाश पर उठा लिया गया'' (10:16ख)।

पतरस का सिर प्रश्नों से अवश्य ही घूमने लगा होगा, कि इसका क्या अर्थ हो सकता है? क्या परमेश्वर सचमुच चाहता था कि वह बाहर जाकर किसी *सूअर* को मार डाले? शुद्ध और अशुद्ध जानवरों के विषय में निर्देश व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग थे। यदि व्यवस्था का एक भाग बदल गया, तो क्या व्यवस्था के दूसरे भाग भी बदल गए थे?[47] क्या परमेश्वर को केवल जानवरों की ही चिन्ता थी, या उसके मन में कुछ और भी था?

हम चकित हो सकते हैं कि शुद्ध और अशुद्ध जानवरों के बारे में दर्शन देने का परोक्ष मार्ग लेने के बजाय परमेश्वर ने पतरस को इतना ही क्यों न कहा कि अन्यजातियों को अब अशुद्ध नहीं माना जाएगा।[48] वास्तव में, अन्यजातियों और शुद्ध तथा अशुद्ध भोजन की स्वीकृति के सम्बन्ध में पुराने नियम के बीच पहले से अधिक निकट सम्बन्ध था। यहूदी/अन्यजाति की संगति में भोजन एक बड़ी दीवार थी। बाद में, जब कैसरिया में अपने कामों के कारण पतरस की आलोचना हुई, तो उसके आलोचकों ने यह उल्लेख नहीं किया कि उसने अन्यजातियों को *बपतिस्मा दिया* था, बल्कि यह कहा कि उसने उनके साथ *खाया* था (11:2, 3)। कोई भी विवेकी यहूदी किसी अन्यजाति के हाथ से तैयार हुआ भोजन नहीं खा सकता था क्योंकि मांस किसी अशुद्ध जानवर का भी हो सकता था; मांस किसी मूर्ति के आगे चढ़ाया हुआ भी हो सकता था जिसे बाद में बाज़ार में बेचा गया हो; लगभग यह तो तय था कि जानवर का लहू व्यवस्था के नहीं बहाया गया होगा; और बाकी भोजन तैयार करने के लिए व्यवस्था के कठोर निर्देशों की पालना भी नहीं की गई होगी। यदि यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवारों को पार करना हो, तो सबसे पहले भोजन से सम्बन्धित नियमों को पार करना आवश्यक था।

पद 17 कहता है, ''जब पतरस अपने मन में दुब्धा कर रहा था, कि यह दर्शन जो मैंने देखा, क्या है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर[49] का पता लगाकर डेवढ़ी पर आ खड़े हुए।'' बाद में, पतरस ने कहा, ''और देखो, *तुरन्त* तीन मुनष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर पर जिसमें हम थे, आ खड़े हुए'' (11:11)। परमेश्वर की समय सारणी अद्भुत थी। यदि वे मनुष्य पहले पहुंच जाते, तो पतरस उन्हें मन से अन्दर आने के लिए न कहता। यदि वे देरी से पहुंचते, तो वह उनकी पूछताछ को उस दर्शन से न जोड़ता जो उसने देखा था।

क्योंकि वे तीनों पुरुष अन्यजातियों से थे और एक यहूदी के घर के साम्हने खड़े थे, वे दरवाज़े से और आगे नहीं जा सकते थे जब तक कि उन्हें अन्दर आने को नहीं कहा जाता। उन्होंने घर में आवाज़ दी, ''क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं पाहुन है'' (10:18)।

''दर्शन के बारे में सोच रहा'' पतरस अभी छत पर ही था। आत्मा ने उससे कहा:[50] ''देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। सो उठकर नीचे जा, और बेखटके उन के साथ हो ले; क्योंकि मैंने ही ने उन्हें भेजा है'' (10:19, 20)। रहस्य पतरस के मन में गहरा गया था। प्रेरित जल्दी से नीचे उतरकर उन पुरुषों के पास गया जो द्वार पर खड़े थे और कहने लगा, ''देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूं; तुम्हारे आने का क्या कारण है?'' (10:21)। पतरस हैरान था कि स्वर्गीय दर्शन और इन लोगों के साथ चलने की आत्मा की आज्ञा का क्या सम्बन्ध हो सकता है।

संदेशवाहकों ने उत्तर दिया, ''कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनामी मनुष्य है, उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह चेतावनी पाई है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से वचन सुने'' (10:22)। मुख्य शब्द ''सूबेदार ... परमेश्वर से डरने वाला ... सारी यहूदी जाति में सुनामी मनुष्य'' से पतरस प्रभावित हुआ होगा इन संदेशवाहकों को भेजने वाला आदमी एक अन्यजाति था! परमेश्वर ने *एक अन्यजाति* को उससे संदेश सुनने का निर्देश दिया था! पतरस के मन में कुछ अंश पड़े थे। दर्शन का उद्देश्य उसके *आहार* को बदलना उतना नहीं था जितना कि उसकी *दिशा* को।

क्या पतरस दर्शन के *पूरे* अर्थ को समझ गया था? मुझे नहीं पता, परन्तु अगली आयत आश्चर्यजनक है: ''तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उन की पहुनाई की'' (10:23क)।[51] यह रोचक बात है कि पतरस ने उन्हें अन्दर बुलाया, चाहे यह उसका अपना घर नहीं था (चर्मकार ने अवश्य कहा होगा, ''मेरा घर आपका घर है''), परन्तु यह उसके बुलाने का अति प्रशंसनीय भाग नहीं था। अति प्रशंसनीय (बल्कि चौंकाने वाला) भाग यह है कि एक *यहूदी* ने *अन्यजातियों* को भोजन करने[52] और रात बिताने के लिए घर में बुलाया! यह उतना बड़ा कदम तो नहीं था जितना किसी यहूदी के एक अन्यजाति के घर में जाना; फिर भी, यह यहूदियों और यूनानियों के बीच की दीवारें हटाने के लिए एक बड़ा कदम था। पूर्वधारणा की दीवार में एक बड़ी दरार दिखाई देने लगी थी!

यहां पर एक छोटा सा प्रश्न है ''पतरस इन लोगों के साथ कैसरिया को तुरन्त क्यों नहीं गया?'' सामान्यत: टीकाकार कहते हैं ''*दिन ढलने लगा था,* सो पतरस ने उन्हें रात बिताने के लिए बुला लिया।'' परन्तु, यह 1:00 बजे *अपराह्न* का समय नहीं होगा, और कुरनेलियुस के तीन संदेशवाहक याफा के लिए लगभग *सायं* 4:00 बजे चले थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि देरी के लिए कई अन्य कारण भी थे। हो सकता है कि पतरस और वे छह व्यक्ति जिन्हें वह अपने साथ लाया था, उतने जवान न हों जितने ये तीन संदेशवाहक[53] और वे सारी रात न चल सकते हों।[54] इन तीनों संदेशवाहकों को भी लौटने से पहले आराम करने की आवश्यकता थी। पतरस ने उनके चेहरों पर सामान्यत: थकान देखकर कहा होगा, ''अन्दर आ जाओ। तुम्हें थोड़ा भोजन कराते हैं। रात भर आराम करने के बाद, हम सुबह जल्दी निकल पड़ेंगे!'' और, छह यहूदी मसीहियों को तैयार करने के लिए भी काफ़ी समय लगा होगा क्योंकि उनकी बात का यरूशलेम में काफ़ी प्रभाव पड़ना था।[55]

प्रचारक तैयार था, परन्तु परमेश्वर ने बाकी यहूदी मसीहियों को तैयार करने का काम अभी करना था।

परमेश्वर का तीसरा कदमः कलीसिया को तैयार करना (10:23-48; 11:12-17)

शेष यहूदी मसीहियों को तैयार करने के लिए ''बड़ा कदम'' उठाने से पहले कई छोटे-छोटे कदम उठाने जरूरी थे। पहला, यहूदी भाइयों को मनाना कि वे पतरस के साथ जाएं परन्तु अन्यजाति संदेशवाहकों के साथ अन्यजातियों के इलाके में दूसरी जगहों की तरह जाना आसान नहीं था जैसे कि यह भी हो सकता है कि परतस ने अपना दर्शन बताकर उन्हें जाने के लिए मना लिया हो। यह भी हो सकता है कि वे उसका आदर करते हों और जब उसने उन्हें जाने के लिए कहा तो वे उसके साथ जाने को तैयार हो गए। उनका प्रयोजन कुछ भी रहा हो, उनमें से कुछ लोग पतरस के साथ जाने के लिए सहमत हो गए। ''और दूसरे दिन, वह उनके साथ गया; *और याफा के भाइयों में से कई उसके साथ हो लिए*'' (10:23ख)। हम अध्याय 11 में पढ़ते हैं कि *छह* भाई पतरस के साथ गए (11:12)। ये लोग तुरन्त याफा नहीं लौटे बल्कि पतरस के साथ यरूशलेम गए (11:12), इसलिए हो सकता है कि जो कुछ होने वाला था उसके सम्बन्ध में गवाह बनाने के लिए पतरस ने उन्हें जानबूझ कर चुना हो।[56] व्यवस्था के अनुसार किसी बात को प्रमाणित करने के लिए दो या तीन गवाहों का होना अति आवश्यक था (व्यवस्थाविवरण 17:6); पतरस ने उससे दोगुने-तिगुने लोग अपने साथ ले लिए।[57]

उत्तर की ओर तीस मील जाने के लिए दस लोग अर्थात तीन संदेशवाहक, पतरस, और छह यहूदी भाई सुबह ही चल पड़े। दो दिनों में, पूर्वाग्रह की दीवार की दरार बड़ी हो गई थी। उस यात्रा से पहले, पतरस और उसके छह मित्रों ने शायद कभी किसी अन्यजाति के साथ इतनी लम्बी बात नहीं की थी। अलगाव से गलतफहमी उत्पन्न होती है, मेल से सहानुभूति। पतरस ने उनसे पूछा होगा कि कुरनेलियुस, उसके परिवार और यीशु के बारे में वे क्या जानते थे। कुरनेलियुस के घर में दिए जाने वाले संदेश का स्वाद चखाते हुए पतरस ने कैसरिया से आने वाले लोगों को यीशु के बारे में बताया होगा। फिर, कहीं पर, पतरस उस सारी घटना के महत्व को बताता हुआ गहराई में चला गया होगा।

पद 24 में हम पढ़ते हैं, ''दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुंचे।'' वहां परमेश्वर ने पतरस और उसके छह यहूदी गवाहों के लिए अन्य आश्चर्य अर्थात और ''कदम'' जो यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवारों को समतल करने के लिए उठाने अभी शेष थे, रखे हुए थे। शेष कहानी जानने के लिए हमें अगले पाठ की प्रतीक्षा करनी होगी।

सारांश

प्रेरितों 10 के पहले भाग का अध्ययन करने के बाद, मुझे आशा है कि दीवारों को गिराने के लिए परमेश्वर की इस कहानी ने हम सभी के हृदयों पर प्रभाव छोड़ा है। ये आयतें हमारे साथ जो यहूदी वंश में से नहीं हैं, में विशेष रूप से बात करती हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के समय मैं छोटा ही था, परन्तु मुझे अभी भी अंकल सैम के अंगुली से इशारा करते हुए वे पोस्टर याद हैं: ''आई वान्ट *यू* [अर्थात मुझे *आपकी* आवश्यकता है।]''[58] प्रेरितों

10 वही स्थान है जहां परमेश्वर ने हम सभी की ओर जो गैर यहूदी हैं, अपनी अंगुली से इशारा किया और कहा, ''मुझे *आपकी* आवश्यकता है!'' कुरनेलियुस और उसका घराना उस दिन से लेकर आज तक हर एक अन्यजाति मसीही आत्मिक पूर्वज हैं!

यह कहानी उनकी भी बात करती है जो, कुरनेलियुस की तरह, भले लोग हैं परन्तु खोए हुए हैं। आप अपने भले होने पर गर्व न करें ; आपको प्रभु और उसके अनुग्रह की भी आवश्यकता होगी!

परन्तु, मुझे आशा है कि यह पद हम में से कइयों की विशेषकर जो पूर्वद्वेष से भरे हुए हैं, बात करता है। विलियम हैज़लिट ने पूर्वद्वेष को ''अज्ञानता की संतान'' कहा था। वोल्टेयर ने कहा था कि पूर्वद्वेष को ''मूर्ख लोग तर्क के लिए उपयोग में लाते हैं।'' याकूब ने लिखा है, ''हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो'' (याकूब 2:1)। यदि हम अपने प्रति ईमानदार हैं, तो हम यह मानेंगे कि हम सभी का झुकाव अतीत की ओर होता है। हम में से हर किसी को अपनी पूर्वधारणाओं या पूर्वद्वेषों की सूची से निकलने और उनके साथ परमेश्वर की सहायता से व्यवहार करने की आवश्यकता है!

परमेश्वर के वचन द्वारा हम से बात करने पर हमें उन परिवर्तनों का पता चलता है जो हमारे लिए करने आवश्यक होते हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि जो भी परिवर्तन आवश्यक हैं, उन्हें आज ही कर लें। पतरस जैसे न बनें जब उसने कहा, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं।'' याद रखिए: परमेश्वर की आज्ञा के लिए सही और, एकमात्र उपयुक्त उत्तर, है ''*हां,* प्रभु।''

विज़ुअल-एड नोट्स

यहूदियों और अन्यजातियों के कलीसिया में निकट आने पर ज़ोर देने के लिए, एक आसान सबक है। कम से कम अठारह इंच लम्बा एक धागा, एक छल्ला तथा कोई भी दो अन्य वस्तुएं लें। एक वस्तु को धागे के एक सिरे से और दूसरी को दूसरे सिरे से बांध दें। एक सिरे की वस्तु यहूदियों का प्रतिनिधित्व करती है; जबकि दूसरे सिरे की अन्यजातियों का। यह बताते हुए कि किस प्रकार दीवार ने उनमें विभाजन किया था, इन दोनों वस्तुओं को जितना सम्भव हो सके एक दूसरे से दूर ले जाएं। फिर धागे के मध्य छल्ला रख दें। यह छल्ला यीशु का प्रतिनिधित्व करता है। धागा छल्ले में से निकालें। ध्यान दें कि ये वस्तुएं जितनी छल्ले के निकट आती हैं, वे उतनी ही एक दूसरे के निकट होती जाती हैं। इसी प्रकार, खींचने की यीशु की सामर्थ (यूहन्ना 12:32) यहूदियों और अन्यजातियों को कलीसिया में ले आई। प्रासंगिकता बनाने के लिए, ध्यान दें कि जितना *हम* मसीह के निकट होते हैं, हम भी, उतना ही एक दूसरे के निकट खिंचे जाते हैं!

प्रवचन नोट्स

जेम्स डी. बेल्स ने कुरनेलियुस और उसके मित्रों के मन परिवर्तन पर द *केस ऑफ़ कुरनेलियुस* शीर्षक से एक पूरी पुस्तक लिखी (डिलाइट, आर्क.: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 1964)।

जिन दिनों मैं प्रचार करना शुरू कर रहा था, तो सेवानिवृत्त प्रचारक ने मुझे अपनी कुछ प्रवचन रूपरेखाएं दीं जिन्हें वह कई वर्षों से इकट्ठा कर रहे थे। उनमें से एक शीर्षक ''तीन अंकों में मनपरिवर्तन'' है जो कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन पर है। कहानी के तीन स्वाभाविक विभाजनों की तुलना नाटक के तीन अंकों के साथ की गई है। प्रत्येक ''अंक'' में, पहले ''मंच सज्जा'' और ''मुख्य नायक'' पर और फिर इसके विभिन्न ''दृश्यों'' के साथ ''एक्शन'' पर ध्यान दिया गया है। ''अंक एक'' के बाद, रूपरेखा में ''मध्यान्तर'' आता है जिसमें पहले ''अंक'' की रोचक बातों पर विचार किया गया है। ''अंक दो'' में भी ऐसा ही होता है। यदि आपको ड्रामा पसन्द हो, तो आपको कुरनेलियुस और उसके घराने के मनपरिवर्तन को ड्रामे के रूप में समझाना अच्छा लगेगा।

प्रेरितों 2, 8 या 10 के सम्बन्ध में एक रोचक अतिरिक्त सबक ''राज्य की कुंजियां'' भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इस पाठ में बताया जाता है कि मत्ती 16:19 में मिली कुंजियों का पतरस ने कैसे प्रयोग किया। परिचय देकर, मैं आमतौर पर एक कुंजी दिखाता हूं जिससे कलीसिया की इमारत के द्वार खोलते हैं। फिर मैं और कुंजियां दिखाता हूं जिनसे इमारत के *भीतरी* द्वार खुलते हैं। इसी प्रकार, पतरस के पास, प्रेरितों 2 में यहूदियों के लिए और प्रेरितों 10 अध्याय में अन्यजातियों के लिए राज्य को खोलने की कुंजियां थीं। उसके पास और कुंजियां भी थीं जिनसे राज्य/कलीसिया के भीतरी ''द्वार खोले गए।'' उदाहरण के लिए, प्रेरितों 8 में उसने दिखाया कि किस प्रकार भटके हुए मसीही प्रभु की ओर लौट सकते हैं (आयत 22)। आप प्रेरितों के काम में पतरस के प्रचार और 1 तथा 2 पतरस में उसके लेखों से जितने प्वाइंट बनाना चाहें बना सकते हैं: स्वर्ग में जाने की ''कुंजी'' (2 पतरस 1:5-11), प्रेरणा पाते रहने की ''कुंजी'' (2 पतरस 3:10-12), इत्यादि। मैं अलग-अलग प्वाइंट बताने के लिए गत्ते की बड़ी-बड़ी कुंजियों का (जिन पर सबक की मुख्य बातें अंकित हों) प्रयोग कर सकता हूं।

पादटिप्पणियां

[1]इफिसियों 1:22, 23. [2]अन्यजाति लोग यहूदी मत अपना सकते थे। [3]मत्ती, मरकुस, और यूहन्ना के अन्य अध्याय क्रूसारोहण के सम्बन्ध में बताते हैं। [4]बहुत से लोग गैरयहूदियों को ''कुत्तों'' के समान मानते थे। कोई यहूदी बाज़ार से आकर भोजन से पूर्व अपने हाथ और भुजाएं कुहनियों तक इस भय से धोता था (मत्ती 15:2) कि वह किसी अन्यजाति को या किसी अन्यजाति से सम्बन्धित किसी वस्तु को छू कर भ्रष्ट न हो गया हो। [5]रोमी राज्यपाल यरूशलेम में विशेष अवसरों पर जाते थे (इसलिए, पीलातुस यीशु की हत्या के समय फसह पर यरूशलेम में था), परन्तु स्थायी रूप से रहते वे कैसरिया में थे। [6]एक सामान्य पलटन में एक सैन्य दल (छह हज़ार पुरुषों का) का दसवां भाग, या लगभग छह सौ पुरुष होते थे; परन्तु एक अतिरिक्त

दस्ते में एक हज़ार पुरुष तक हो सकते थे। [7]रोमी सेना के बहुत से बलों में प्रांतीय लोग होते थे, सो कुछ समय के बाद उस क्षेत्र के लोगों के स्थान पर इटली वासियों को लगा दिया जाता था, परन्तु पद वही रहता था। [8]''कुरनेलियुस'' एक साधारण लातीनी नाम था। कई वर्ष पूर्व, कुरनेलियुस सुल्ला ने दस हज़ार दासों को स्वतंत्र करवाया था, और कइयों ने उसका नाम ही अपना लिया था। [9]नये नियम में कई सूबेदारों का उल्लेख है, और निरपवाद उन्हें सम्माननीय रूप में दिखाया गया है। सूबेदारों को रोमी सेना की रीढ़ की हड्डी माना जाता था। [10]विद्वानों के पास ''परमेश्वर का भय मानने वाला'' के लिए कई तकनीकी शब्द हैं, जैसे कि ''निकट-धर्मान्तरित'' और ''धर्मान्तरण के द्वार पर।'' ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में शब्दावली में देखिए ''परमेश्वर का भय मानने वाला।''

[11]इस तथ्य को कि उसका खतना नहीं हुआ था 11:3 में रेखांकित किया गया है। [12]प्रेरितों 10:30. वेस्टर्न टैक्सट ने ''उपवास'' जोड़ा है (देखिए KJV)। ''वेस्टर्न टैक्सट'' दूसरी से चौथी सदी में रोम में शास्त्र की उपयोग होने वाली प्रतियों को कहा गया। [13]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 3:1 पर नोट्स देखिए। [14]यहूदी लोग समय की गणना प्रात:काल से आरम्भ करते थे, सो दिन का तीसरा पहर (नौवां घण्टा) लगभग सायं 3:00 बजे का समय होता था। [15]''*स्पष्ट रूप* से देखा'' इस बात पर ज़ोर देता है कि यह उसकी कल्पना नहीं थी। [16]बाइबल में, किसी के अलौकिक जीव का सामना करने पर यह एक सामान्य प्रतिक्रिया है। [17]इस संदर्भ में, ''प्रभु'' शब्द सम्मान व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता होगा। [18]स्वर्गदूत द्वारा प्रयुक्त दो शब्द बलिदान की कल्पना का सुझाव देते हैं: (1) होमबलि के लिए यूनानी शब्द का अक्षरश: अर्थ है ''ऊपर उठना।'' (2) वेदी पर जलाई गई अन्नबलि के कुछ भाग को ''स्मरण दिलाने वाला भाग'' कहा जाता था (लैव्यव्यवस्था 2:2, 9, 16; 5:12)। NIV में 10:4 में इसे ''यादगारी की भेंट'' कहा गया है। [19]यह ध्यान दिया जा सकता है कि चंगाई पाने वाले आदमी, जिसने ये बातें कहीं, आत्मा की प्रेरणा से नहीं कही थीं। तथापि, ये बातें, पुराने नियम की सामान्य सच्चाई पर आधारित थीं (नीतिवचन 28:9)। ध्यान दें कि ये बातें *परमेश्वर की संतान* के लिए हैं जो पाप करती है न कलीसिया के बाहर किसी पापी के लिए। [20]*यदि* कुरनेलियुस को दिए स्वर्गदूत के दर्शन को उसकी प्रार्थनाओं का सीधा उत्तर माना जाए, तो यह *हो सकता है* कि कुरनेलियुस परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए और प्रकाशन की मांग कर रहा था।

[21]देखिए 22:16, जहां पर प्रचारक ने *प्रार्थना कर रहे* एक आदमी से कहा, ''अब देर क्यों करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'' [22]''सुन'' शब्द का प्रयोग ''उत्तर देने'' के भाव से अर्थात, उत्तर के लिए किया गया है। [23]KJV में पद 6 के अन्त में ये शब्द जोड़े गए हैं: ''वह तुझे वे बातें बताएगा जो तुझे जाननी आवश्यक हैं।'' यद्यपि सम्भवत: मूल शास्त्र में ऐसा न हो, इन शब्दों का दबाव 10:22 और 11:14 में मिलता है। [24]अनुवादित यूनानी शब्द ''बातें,'' ''बातों'' के लिए सामान्य शब्द नहीं, बल्कि *रिमाता* है, जिसका अर्थ है ''जो बोला गया।'' [25]मैं महसूस करता हूं कि जिस समय यीशु क्रूस पर मरा और जिस समय विभिन्न क्षेत्रों में सुसमाचार का प्रचार हुआ, उसके बीच परिवर्तन का एक समय था और *मुझे* यह न्याय करने का कोई अधिकार नहीं कि उस समय किसी आदमी का उद्धार या नाश हुआ था। अधिकार तो परमेश्वर के पास था और परमेश्वर ने कहा कि कुरनेलियुस और उसके घराने का उद्धार *नहीं* हुआ था। [26]कुरनेलियुस और उसका घराना इफिसियों 2:12 में वर्णित लोगों के आदर्श-स्वरूप हैं। [27]हो सकता है कि सिपाहियों को दो सेवकों की सुरक्षा के लिए भेजा गया हो। यह तथ्य कि उसे ''भक्त'' कहा जाता था, संकेत करता है कि वह ''परमेश्वर का भय मानने वाला'' था और कि कुरनेलियुस उन सबको प्रभावित कर रहा था जो उसके आस पास थे। [28]हम नहीं जानते कि वे कैसे गए: पैदल, घोड़े पर, या किसी अन्य साधन से। [29]सामान्यत:, ये घटनाएं प्रचारक और पापी को मिलाने के लिए घटीं। शाऊल के सम्बन्ध में, उसे एक प्रेरित होने के योग्य बनाने के लिए यीशु के दर्शन का पहलू जोड़ा गया। [30]ध्यान दें 8:40 और 21:8-14। 8:40 की यात्रा में कुछ समय लगा होगा; क्योंकि 9:1-31 की घटनाएं कम से कम तीन वर्षों के आस-पास घटीं (तु. गलतियों 1:18), इसलिए फिलिप्पुस निश्चय ही प्रेरितों 10 की घटनाओं के समय तक कैसरिया में पहुंच गया था। जब फिलिप्पुस कैसरिया में पहुंचा, तो स्पष्ट है कि वहां रहने लगा होगा।

[31]कई लोगों ने सुझाव दिया है कि कुरनेलियुस और उसका घराना अन्यजातियों में पहले मसीही नहीं थे, परन्तु यरूशलेम के इतने निकट थे कि उससे यरूशलेम के मसीही व्याकुल हो सकते थे। 15:7 में पतरस के शब्द निर्णायक लगते हैं कि परमेश्वर ने अन्यजातियों में सबसे पहले प्रचार करने के लिए *उसे* चुना। [32]यहूदी लोग समय को सूर्यास्त और सूर्योदय से मापना आरम्भ करते थे। दोपहर के निकट से भाव दोपहर 12 बजे है। [33]बहुत से बच्चे पतरस को छत की ढलान से प्रार्थना करता हुआ दिखाते हैं। इससे व्याख्या होती है कि छत चौरस थी और सुरक्षा के लिए इसके किनारे (मुंडेर) की दीवार छोटी थी (व्यवस्थाविवरण 22:8)। [34]प्रेरितों ने आरम्भ में हियाव के लिए प्रार्थना की थी (तु. 4:29)। [35]अनुवादित यूनानी शब्द ''खाना'' वह शब्द था जिसका प्रयोग अक्सर चिकित्सक किया करते हैं। लूका की चिकित्सकीय पृष्ठभूमि यहां स्पष्ट झलकती है। [36]हम में से अधिकतर लोग दोपहर के भोजन के आदी हैं और मानते हैं कि चर्मकार के घर में बनने वाला भोजन साधारण था। कई जगह अलग-अलग समय पर भोजन खाया जाता है, सो सम्भव है कि यह एक *विशेष* भोजन था जो केवल पतरस के लिए बनाया जा रहा था क्योंकि उसे भूख लगी थी। [37]इसका अर्थ ''उठ'' शब्द (आयत 13) में मिलता है। [38]एक मिश्रित शब्द से निकला यूनानी शब्द है *एक्सटेसिस,* जो ''बाहर'' और ''रखना'' को मिलाता है। इसका अक्षरश: अर्थ है ''विस्थापन'' और यह मन की चेतना के एक ऊंचे स्थान पर स्थानांतरण की ओर संकेत है। [39]देखिए 11:6. [40]न्यू सैंचुरी वर्ज़न।

[41]उत्पत्ति 6:20. मछलियों की सूची नहीं है, सम्भवत: इसलिए क्योंकि उनके लिए पानी से बाहर आना असंगत होता। [42]''शुद्ध'' और ''अशुद्ध'' में अन्तर लैव्यव्यवस्था 11:1-47 और व्यवस्थाविवरण 14:3-20 में मिलते हैं। ''शुद्ध'' होने के लिए एक चौपाए पशु के लिए खुर फटे और पागुर करने वाला होना आवश्यक था। (पागुर करने वाले पशुओं के कई अमाशय होते हैं। वे अपने आंशिक चबाए हुए भोजन को निगल लेते हैं, और यह पहले अमाशय में चला जाता है। बाद में वे भोजन को उगल देते हैं। इसे चबाना बन्द करते हैं और फिर यह दूसरे अमाशय में चला जाता है। उगले हुए भोजन को चबाने की क्रिया को ''जुगाली या पागुर करना'' कहते हैं।) शुद्ध और अशुद्ध ''रेंगने वाले जीवों'' तथा पक्षियों के नाम लैव्यव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण में मिलते हैं। [43]परमेश्वर को यहां तीसरे व्यक्ति के रूप में बताया गया है (आयत 15), इसलिए यहां बात स्वर्गदूत कर रहा हो सकता है। परन्तु पतरस, समझ गया कि यह *परमेश्वर* की ओर से एक सन्देश था (आयत 28)। [44]''कोशर'' शब्द केवल उस भोजन के लिए प्रयुक्त होता है जिसे खाने की अनुमति केवल यहूदियों को थी। ''कोशर'' एक पिद्दी शब्द है जो ''उचित'' के लिए इब्रानी भाषा से लिया गया है। [45]अनुवादित यूनानी शब्द ''अपवित्र'' सामान्य यूनानी शब्द ''अपवित्र'' के लिए नहीं, बल्कि यह वह शब्द है जिसका अर्थ है ''साधारण'' (देखिए KJV)। [46]ध्यान दें 1 तीमुथियुस 4:3-5. पहले ही यीशु ने शुद्ध तथा अशुद्ध भोजन के नियमों को स्पष्ट करने लिए आधार बना दिया था (मरकुस 7:14-23), परन्तु यीशु के शब्दों के पूरा होने से पहले परमेश्वर ने यह दर्शन भेजना था। यदि (जैसा कि माना जाता है) सुसमाचार में मरकुस के वृत्तांत पतरस के प्रचार का संक्षेप है, तो हो सकता है कि मरकुस 7:19 में टिप्पणी का स्रोत पतरस ही हो: ''यह कहकर उसने [यीशु ने] सब भोज्य वस्तुओं को शुद्ध ठहराया।'' [47]प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हुए, हमें समझना चाहिए कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा को एक ही बार प्रकट नहीं कर दिया। बल्कि, उसने इसे ''जैसे आवश्यकता हुई'' और जैसे-जैसे उसके सन्देशवाहक उसे प्राप्त करने के लिए तैयार थे वैसे ही इसे प्रकट किया। [48]हो सकता है कि यह नये नियम में लोगों को सिखाने का परमेश्वर का ढंग हो। वह हमें आवश्यक जानकारी देता है परन्तु फिर भी हमसे अपेक्षा करता है कि जो उसने हमें दिया है, हम उसका इस्तेमाल करने के लिए अपने दिमाग का उपयोग करें। [49]स्वर्गदूत ने उन्हें निकट जाने के लिए पर्याप्त जानकारी दे दी थी; वहां से, उन्हें दिशाएं पूछनी थीं। परमेश्वर हमारे लिए वह नहीं करता जो हम स्वयं कर सकते हैं। [50]पतरस अब अन्तर्लीन नहीं था, सो संचार का माध्यम अब कुछ भिन्न था। सम्भवत: इस तथ्य का कि ''एक *स्वर्गदूत*'' ने कुरनेलियुस से बात की जबकि पतरस के साथ ''एक *आवाज़* ने'' और फिर ''*पवित्र आत्मा*'' ने, में कोई महत्व नहीं है। इन सभी घटनाओं में, *परमेश्वर* ही बोल रहा था (10:20, 22, 28)।

[51]यद्यपि यहूदी आम तौर पर अन्यजातियों को अपने घरों में नहीं बुलाते थे, बाइबल के समय में

अतिथि-सत्कार जीवन का एक सामान्य व्यवहार था। लोगों को अपने यहां खाना खाने और रात बिताने के लिए सुलाने की प्रथा आम थी। [52]कोई शमौन के घर में भोजन तैयार कर रहा था (10:10)। यह घटना उस दोष के साथ शामिल होनी थी कि पतरस ने अन्यजातियों के साथ भोजन किया (11:3)। [53]कुरनेलियुस ने सम्भवत: अपने शक्तिशाली और तेज सन्देशवाहकों को चुना होगा। [54]कुरनेलियुस ने अच्छे, ''चलने वालों'' को चुना जबकि पतरस ने बढ़िया ''गवाहों'' को चुना, जिनमें से कई निश्चय ही बूढ़े पुरुष होंगे। [55]छह पुरुष तुरन्त ही याफा के बजाय पतरस के साथ यरूशलेम में गए (तु. 11:12)। वे काफ़ी समय से अपने घरों से दूर रहे होंगे, सो उन्हें अपने व्यवसायों तथा परिवारों का प्रबंध करना पड़ा होगा। [56]अन्य शब्दों में, पतरस ने इस सम्भावना का अनुमान लगा लिया होगा कि अपने कार्यों के लिए उसकी आलोचना होगी। जब वह कैसरिया के मार्ग से चलने लगा, तो उसे सम्भवत: यह पता नहीं था कि क्या होने वाला है, परन्तु जो कुछ भी हो, उसके लिए उसे विश्वसनीय गवाहों की आवश्यकता थी। [57]टीकाकारों को मिस्री या रोमी कानून में सात गवाहों के महत्व पर ध्यान दिलाना अच्छा लगता है। यदि यह तथ्य कि *सात* गवाहों (छह पुरुषों और पतरस) का कोई महत्व था, तो इस महत्व का सम्बन्ध मूर्तिपूजकों के लिए इसके महत्व के बजाय यहूदियों के लिए अंक ''7'' (एक ''सम्पूर्ण'' अंक) के महत्व से था। [58]मुझे लगता है कि यह विचार ग्रेट ब्रिटेन से लिया गया था। हाल ही के वर्षों में, भर्ती में उपयोग के लिए अमेरिकी सेना द्वारा अंकल सैम का पोस्टर पुन: जीवित किया गया है।

एक परमेश्वर सब में कार्य करता है

''प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हुए आपको पतरस और पौलुस की सेवकाई में समानताएं मिलेंगी। दोनों ने अपाहिजों को चंगा किया और मुर्दों को जिलाया। दोनों ही गिरफ्तार हुए और जेल में डाले गए और चमत्कारी ढंग से छुड़ा लिए गए। दोनों के साथ ही देवताओं जैसा व्यवहार हुआ (10:25, 26; 14:8-12), और दोनों ने ही अधिकारियों के सामने निर्भय होकर दृढ़तापूर्वक गवाही दी। ... कोई भी व्यक्ति प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़कर, अन्त में यह नहीं कह सकता, 'मैं पौलुस के पक्ष में हूं!' या 'मैं पतरस के पक्ष में हूं!' (1 कुरिन्थियों 1:12)। 'परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है' (1 कुरिन्थियों 12:6ख)।''

द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री, vol. 1 से रूपान्तरित
वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे

एक व्यवस्था सब के लिए कार्य करती है

''उद्धार के निमित्त परमेश्वर की एक ही व्यवस्था है। यह हर किसी के लिए एक जैसी ही है। किसी बालक के लिए भौतिक संसार में आने का एकमात्र मार्ग भौतिक जन्म ही है। बच्चों का जन्म घरों, अस्पतालों, मोटरगाड़ियों, हवाई जहाज़ों, और पार्कों आदि में हो जाता है, परन्तु हर किसी को शारीरिक जन्म का अनुभव अवश्य है। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश केवल जल और आत्मा से जन्म लेकर ही हो सकता है (यूहन्ना 3:3-5)। परमेश्वर की संतान कलीसिया की इमारत, अस्पतालों और चरागाहों में जन्मी है, परन्तु हर किसी को आत्मिक जन्म का अनुभव हुआ है। जन्म लेने के बारे में परमेश्वर की व्यवस्था को नज़रअन्दाज करके जन्म लेने की परिस्थितियों पर ज़ोर देना गलत है।''

द नीड फ़ॉर रिवाइवल, जिमी ऐलन